2016

HINDI

[Honours]

PAPER – VI

Full Marks : 90

Time : 4 hours

The figures in the right hand margin indicate marks

Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable

Illustrate the answers wherever necessary

खण्ड — क

1. निम्नलिखित में से किन्हीं *दो* प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 15 × 2

(क) 'चन्द्रगुप्त' नाटक प्रसाद की राष्ट्रीय भावनाओं का प्रतीक है' — इस कथन की तर्क सम्मत विवेचना कीजिए ।

(ख) अभिनेयता की दृष्टि से 'लहरों के राजहंस' नाटक की समीक्षा कीजिए ।

(*ग*) हिन्दी ललित निबंधों के क्षेत्र में डा. विद्यानिवास मिश्र के योगदान का मूल्यांकन कीजिए ।

(*घ*) 'शैली ही व्यक्ति है' – इस उक्ति के आधार पर शुक्ल जी के निबंधों की शैलीगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

(*ङ*) एकांकी तत्त्वों के आधार पर 'बहुत बड़ा सवाल' की समीक्षा कीजिए ।

(*च*) 'मनुष्य की सर्वोत्तम कृति साहित्य' में व्यक्त लेखक के विचारों का विवेचन कीजिए ।

खण्ड — ख

2. निम्नलिखित में से किन्हीं *पाँच* पर टिप्पणी लिखिए : 8 × 5

(*क*) 'अलका' का चरित्र-चित्रण ।

(*ख*) नाटककार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ।

(*ग*) 'कविता क्या है ?' निबंध का उद्देश्य ।

(*घ*) 'लहरों के राजहंस' नाटक के शीर्षक की सार्थकता ।

(*ङ*) 'अंधेर नगरी' नाटक की भाषा ।

(*च*) निबंधकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ।

(छ) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के श्रद्धा सम्बन्धी विचार ।

(ज) 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' का प्रतिपाद्य ।

खण्ड — ग

3. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्ही *पाँच* की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 4 × 5

(क) "रात बीतने दे, फिर अपने मन से पूछना । रात-भर नगर-बधू चन्द्रिका के चरणों की गति से इस भवन की हवा काँपती रहेगी । हवा काँपती रहेगी और ढुलती रहेगी मदिरा ... उसकी आँखों से, उसके एक-एक अंग की गोराई से । तू देखेगी और विश्वास नहीं कर सकेगी । जो नहीं देखेंगे, वे तो कल्पना भी नहीं कर पाएँगे ।"

(ख) "कविता केवल वस्तुओं के ही रंग-रूप में सौन्दर्य की छटा नहीं दिखाती, प्रत्युत कर्म और मनोवृत्ति के भी अत्यंत मार्मिक दृश्य सामने रखती है । वह जिस प्रकार विकसित कमल, रमणी के मुख मंडल आदि का सौन्दर्य मन में लाती है, उसी प्रकार उदारता, वीरता, त्याग, दया, प्रेमोत्कर्ष इत्यादि कर्मों और मनोवृत्तियों का सौन्दर्य भी मन में जगाती है ।"

(ग) "माना की-देस बहुत बुरा है, पर अपना क्या ? अपने किसी राज-काज में थोड़े है कि कुछ डर है, रोज मिठाई चाभना, मजे में आनन्द से रामभजन करना ।"

(घ) "अपने व्यवहार-पथ में आश्रय-प्राप्ति के निमित्त मनुष्य के लिए ईश्वर की स्वानुरूप भावना ही सम्भव है। स्वानुभूति द्वारा ही वह उस परमानुभूति की धारणा कर सकता है। इसी से भर्तृहरि ने 'स्वनुभूत्यैकमानव' कहकर नमस्कार किया है। यदि चिंतन में अपनी इतनी अनुभूति का निश्चय मनुष्य को न हो, तो वह प्रार्थना आदि करने क्यों जाए?"

(ङ) " कैसे मंगलमय-प्रभात की कल्पना थी और कैसी अंधेरी कालरात्रि आ गयी है ? एक-दूसरे को देखने से डर लगता है। घर मसान हो गया है, अपने ही लोग भूत-प्रेत बन गये हैं, पेड़ सूख गये हैं, लताएँ कुम्हला गयी हैं। नदियों और सरोवरों को देखना भी दुस्सह हो गया है ।"

(च) "जो आदमी दूसरों के भावों का आदर करना नहीं जानता उसे दूसरे से भी सद्भावना की आशा नहीं करनी चाहिए। मनुष्य कुछ ऐसी जटिलताओं में आ फंसा है कि उसके भावों का ठीक-ठीक पहचानना सब समय सुकर नहीं होता।"

(छ) "कालीदास ने कहा था कि सब पुराने अच्छे नहीं होते, सब नये खराब ही नहीं होते। भले लोग दोनों की जाँच कर लेते हैं, जो हितकर होता है उसे ग्रहण करते हैं और मूढ़ लोग दूसरों के इशारे पर भटकते रहते हैं। सो, हमें परीक्षा करके हितकर बात सोच लेनी होगी और अगर हमारे पूर्व संचित भंडार में वह हितकर वस्तु निकल आवे, तो इससे बढ़कर और क्या हो सकता है ?"